2. व्यवहार कला अथवा लोकरंजन कला
(The Art of Dealing with Others or Pleasing Others)

मनुष्य का जीवन वास्तव में ऐसा होना चाहिये कि वह दूसरों को चन्दन की भाँति शीतलता देने वाला हो, गुलाब की भाँति सुगन्धि देने वाला हो और मधु के समान मीठा अथवा प्रिय लगने वाला हो तथा फल के समान रस देने वाला हो। परन्तु अपने व्यवहार को ऐसा सुन्दर और कुशल बनाना, जिससे कि लोग सन्तुष्ट और प्रसन्न हों, यह भी एक कला है। परन्तु मनुष्य अपने जीवन द्वारा लोकरंजन अथवा जन-तुष्टि तभी कर सकता है जब उसमें मुख्य रूप से ये छः बातें हों— (1) दूसरों के जीवन को भी अनमोल समझना और उनके जीवन को नष्ट-भ्रष्ट करने की चेष्टा न करके उन्हें संभालने, आदर देने, आश्रय देने, सुख देने आदि की पूरी कोशिश करना (2) दूसरों के भाव और स्वभाव दोनों को समझकर अर्थात् उनके संस्कार और परिस्थिति को जानकर उनके प्रति सहानुभूति, सौजन्य, सद्भावना और स्नेह की प्रवृत्ति करना (3) सदा यह लक्ष्य अपने सामने रखना कि वह दूसरों पर किसी भी प्रकार बोझ न बने और उनसे विशेष सेवा न ले (4) इस बात को याद रखना कि यदि दूसरों को दुःख दूँगा तो दुःखी होकर मरूँगा (5) सबका शुभ-चिन्तक बनकर रहना (6) अपना कर्त्तव्य पालन करना तथा उत्तरदायित्व निभाना।

अब देखा जाये तो जब कोई मनुष्य महसूस करता है कि दूसरा व्यक्ति उसकी सुख-सुविधा का भी कुछ ख़्याल करता है, उसमें थोड़ी-बहुत योग्यता भी मानता है, उसके जीवन का भी कोई मूल्य तथा आदर समझता है तो उस व्यक्ति के प्रति उसकी सहृदयता हो जाती है। परन्तु दूसरों के जीवन को भी अनमोल वही मानेगा जो योग द्वारा सच्चे सुख की कमाई करके, अनुभव के आधार पर जानता होगा कि वास्तव में दूसरों का जीवन भी कितना अनमोल है या अनमोल बन सकता है। जैसे, सहोदर भाई अपने भाई को ऊँचा बनाने की सदा चेष्टा करता है, वैसे ही परमात्मा को पिता के रूप में याद रखने वाला, सच्चा योगी ही तो आत्माओं रूपी भाइयों के जीवन को भी ऊँचा बनाने की चेष्टा करेगा। योगी ही तो शुभ सोचता और शुभ करता है; इसलिए वह ही तो सही रूप में दूसरों का शुभ-चिन्तक हो सकता है। रहमदिल अथवा दयालु भगवन् के साथ नाता जुटा होने के कारण वह ही तो दूसरों के संस्कारों तथा परिस्थितियों को समझते हुए उनके प्रति सहानुभूति की भावना रख सकता है। अतः निश्चय ही योग ही एकमात्र ऐसी कला है जिस द्वारा मनुष्य का जीवन लोकरंजन अथवा जन-मन को सन्तुष्ट करने वाला अर्थात् लोक पसन्द बन सकता है।